गाँव की कुसुम और उसकी आपबीती-1

“गाँव की रहने वाली एक लड़की के जीवन में ऐसा क्या घटित हुआ जो वो अमरीका पहुँच गई और उसकी घटना एक हिन्दी सेक्स कहानी के रूप में अन्तर्वासना के पाठकों को पढ़ने को मिली. …”

Story By: Rahul srivastav (rahulsrivas)
Posted: Friday, October 7th, 2016
Categories: ऑफिस सेक्स
Online version: गाँव की कुसुम और उसकी आपबीती-1

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

गाँव की कुसुम और उसकी आपबीती-1

एक लड़की जिसका नाम कुसुम केशरवानी था, अभी वो अमेरिका में रहती है, शादीशुदा है पर वो इलाहाबाद से करीब 30 किलोमीटर दूर एक गांव की रहने वाली थी।

वो अमेरिका कैसे पहुँची, क्या हुआ उसके साथ…

मैं राहुल श्रीवास्तव मुम्बई से एक बार फिर अपनी हिंदी सेक्स कहानी के साथ अन्तर्वासना के पाठको के साथ मुखातिब हूँ !

जब मेरी दूसरी कहानी इस मंच पर आई तो मुझे काफी इमेल्स मिले… और सभी को मैंने जवाब भी दिए।
उन्ही में से एक लड़की, जो अमेरिका से थी, से बराबर ईमेल का बहुत दिन तक आदान प्रदान होता रहा।

उस लड़की ने अपनी आप बीती मुझे बताई कि वो इलाहाबाद से अमेरिका कैसे पहुँची और मुझसे कहा कि आप दुनिया को बतायें।
परन्तु उस वक़्त मैं अपनी नई कहानी में व्यस्त था और ऑफिस में भी काम ज्यादा था तो उस कहानी को लिख नहीं पाया।

यह कहानी मूल रूप से कुसुम जी की है, उनके अंग्रेज़ी में लिखे शब्दों को मैंने हिंदी सेक्स कहानी के रूप में लिखा है।
परंतु उसका मूल स्वरूप नहीं बदला है।

एक लड़की जिसका नाम कुसुम केशरवानी था, अभी वो अमेरिका में रहती है, शादीशुदा है पर वो इलाहाबाद से करीब 30 किलोमीटर दूर एक गांव की रहने वाली थी।

वो जो रोज़ इलाहाबाद आती थी जॉब करने...

मैं चाहता हूँ कि आगे की कहानी आप कुसुम के शब्दों में ही सुन लीजिये !

मेरा नाम कुसुम है, मैं आज आपको अपनी जिंदगी की वो बात बता रही हूँ जो कोई नहीं जानता जिसे मैं और मेरे ससुर ही जानते हैं। बाकी आप सब बतायें कि क्या गलत था और क्या सही !

राहुल श्रीवास्तव जी का शुक्रिया जो उन्होंने मेरी मदद की और मेरे जीवन की यह सच्चाई आपकी सामने हिंदी सेक्स कहानी के रूप में पेश की।

मैं कुसुम 20 साल की हूँ, गेहूआं रंग है, मेरा सीना 34 कमर 30 और चूतड़ 33 है। मैं सांवली तो नहीं पर गोरी भी नहीं हूँ।
मेरे चेहरे में कोई खास आकर्षण नहीं था, जो कुछ आकर्षण था वो मेरे शरीर की बनावट और मेरी छाती में था, मैं अभी तक किसी पुरुष के स्पर्श से वंचित थी।

गांव में रहने के कारण मेरा शरीर भरा भरा था, पर गांव के और पारिवारिक बंधनों के कारण किसी पुरुष को अपना मित्र नहीं बना पाई।
शादी में भी कई तरह की रुकावट थी एक तो गरीब घर, दूसरा पढ़ी लिखी और नौकरी वाली लड़की सबसे बड़ी बाधा थी।
ज़ाहिर है कि मैं अभी भी अपनी सपनों के राजकुमार के इंतज़ार में अपनी जवानी बर्बाद कर रही थी।

ऐसा नहीं था कि मेरा मन नहीं मचलता था, पर क्या करें, सोच कर दिल को समझ देती थी।

मैं जहाँ काम करती थी वो ऑफिस में अधेड़ उम्र के सज्जन थे श्री मुकेश जी उम्र 47 साल के विधुर थे और उनका एक मात्र लड़का राकेश अमेरिका में उच्च शिक्षा के लिए गया हुआ

था।

मुकेश जी बहुत ही सज्जन और कई तरह के कामों के ज्ञाता थे, या यह कहिये कि वो ऑफिस की जान थे, हर काम चुटकियों में निपटा देते थे.. हर कठनाई का हल था उनके पास!
जब कभी भी कंपनी का कोई काम सरकारी विभाग में रुक जाता, तब उसे भी वही हल करते थे।

हम सभी लोग उनसे बहुत प्रभावित थे।
खास तौर से मैं तो बहुत प्रभावित थी, मुकेश जी किसी भी तरह से 47 साल के नहीं लगते थे।
जीन्स और टी और स्पोर्ट्स शूज उनके पसन्दीदा थे, बहुत ही हैंडसम व्यक्तिव था उनका चुस्ती फुर्ती इतनी के उनसे कम उम्र के लोग ईर्ष्या करे और मैं बहुत ज्यादा प्रभावित थी।

एक बार वो मेरे घर भी आ चुके थे।
मेरे माता पिता भी उनसे प्रभावित थे पर मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरा कुँवारा यौवन उनको समर्पित होगा।
पर ऐसा हो गया।

बात कुम्भ की है वो भी पूरा कुम्भ था।
अब कुम्भ में तो शहर में अत्यधिक भीड़ भी थी, हमको आने जाने में बहुत तकलीफ थी और कुछ खास पर्व में तो सारे रास्ते भी बंद होते थे।

छुट्टी मिल नहीं सकती थी तो हमने इलाहाबाद में ही कुछ दिन रुकने का मन बनाया पर समस्या यह थी कि कहाँ रुकूँ ?
ऐसे में मुकेश जी आगे आए और उन्होंने मेरे को अपनी घर में रुकने का प्रस्ताव दिया।

मुकेश जी सिविल लाइन्स में एक आलीशान बंगले के स्वामी थे, दो मंजिल बंगले में ऊपर किरायदार थे और नीचे चार कमरों में वो खुद रहते थे।
ज्यादातर उनके सारे कमरे बंद ही रहते थे, सिर्फ वही कमरा खुला होता था जिसमें वो रहते थे।

मैंने अपनी घर में बात की तो मुकेश जी की उम्र के कारण मुझे परमिशन मिल गई।
फिर जब मैंने मुकेश जी से किराया पूछा तो उन्होंने हंस कर कहा कि किराये में मुझे अपनी हाथ का खाना बना के उनको खिलाना होगा क्योंकि वे नौकरों के हाथ का खाना खा कर उक्ता गए थे।

यह मुझे मंजूर था क्योंकि मुझे खाना बनाना बहुत पसंद था और स्वादिष्ट भी बनाती थी।

खैर मैं एक शनिवार को अपनी पिताजी और सामान के साथ उनकी घर पर शिफ्ट हो गई।

मुकेश जी एक बड़ा सा कमरा मेरे लिए खुलवा के रखा था और साफ सफाई भी करवा दी थी।
पिताजी मेरा सामान रखवा कर गांव वापस लौट गए और मैं ऑफिस चली गई।

शाम को हम और मुकेश जी साथ में ऑफिस से घर आये, नौकर उनका खाना बना कर गया था।
फ्रेश होकर मैंने टी और ट्रैक पेंट पहन लिया।

मुकेश जी भी फ्रेश होकर लुंगी और कुरते में आकर टेबल में बैठ गए।
मैंने खाना गर्म किया और साथ में खाना खाया।

फिर हम दोनों अपने अपने रूम में चले गए।

नंगा बदन

अगली सुबह रविवार था, मैं जब सुबह उठी तो फ्रेश होकर बाहर लिविंग रूम आई तो मैं ठिठक सी गई क्योंकि मुकेश जी योग कर रहे थे, उनके जिस्म में सिर्फ एक लंगोट थी जो सिर्फ उनके विशाल अंग को समेटे थी।

आह क्या चौड़ी छाती, खुले हुए बड़े से कंधे, पेट तो बिल्कुल अंदर था।
भरी हुई जांघें और उनका पूरा गोरा जिस्म पसीने में चमक सा रहा था।

मेरे जिस्म में एक करंट सा दौड़ गया, मैंने देखा मेरे निप्पल पूरे खड़े हो गए हैं, पहली बार एक मर्द को इस तरह से देखा था।
उनकी जांघों के बीच में लंगोट में बड़े से लंड का उभार साफ नज़र रहा था।

मैं एकटक उनके निर्वस्त्र जिस्म को घूरने लगी।
मेरी तन्द्रा तब टूटी जब मुकेश जी ने मुझे हिला कर कहा- कुसुम क्या हुआ ?
मैं बोली- कुछ नहीं…

मुकेश जी मेरी छाती पर घूरते हुए बोले- सॉरी, मैं भूल गया था कि घर में तुम भी हो ! कल से ध्यान रखूँगा।
मैंने देख लिया था कि वो मेरी चूची को घूर रहे हैं और उनके लंगोट का आकार भी बदल गया था, जो मुझे अच्छा लगा।

मैं बोली- मुकेश जी, मेरी वजह से आपको कुछ भी बदलने के जरूरत नहीं है, आप जैसे हैं, वैसे बहुत अच्छे हैं, और वैसे ही रहिये जैसे आप रहते हैं, मुझको कोई प्रॉब्लम नहीं है।
कह कर एक स्माइल उनकी टांगों के बीच में देखते हुए दे दी।

मुकेश जी की आँखों के चमक मुझसे छिपी नहीं रही, लड़की थी तो पुरुष की नज़र को अच्छे से पहचानती थी।
मैं किचन में जाकर ग्रीन लाइम चाय बना लाई और उनके साथ बैठ कर पीने लगी।

चाय के दौरान मैंने देखा कि मुकेश जी के नज़र मेरी बदन के हर हिस्से को घूर रही है खास तौर से मेरी चूची को!
न जाने क्यों मुझे अच्छा लग रहा था और मेरी चूची जो बिना ब्रा की थी, वो टाइट होने लगी, मेरी निप्पल खड़े हो गई और मेरी टी से दिखाई देने लगी।

मेरी पैंटी में भी गीलापन आने लगा।

वैसे तो मुकेश जी मेरे पिता के उम्र के थे पर पता नहीं क्यों जब से उनके जिस्म को देखा था, मेरे बदन में एक हलचल से हो रही थी।मेरी पैंटी में गीलापन आ गया था।

मुकेश जी कुछ असहज से हो गए, मेरी आँखों के सामने उनका लंगोट में उभरा हुआ आकार ही नाच रहा था।
यह हिन्दी सेक्स कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं!

तभी मुकेश जी ने पूछा- आज रविवार को क्या स्पेशल बना रही हो?
तो मैंने कहा- जो आप बोलें?

'तुम मटन खाओगी?'
मैंने कहा- हाँ!
मुकेश जी बोले- ठीक है, अभी लेकर आता हूँ।
मैंने कहा- आप नहा लीजिये… मैं तब तक नाश्ता बना लेती हूँ

मैं नाश्ता लेकर जब रूम में पहुँची तो रूम खाली था.. मुकेश जी नज़र नहीं आये।

तभी बाथरूम का दरवाज़ा खुला और मुकेश जी निर्वस्त्र अवस्था में बाहर आये।

उनका नंगा जिस्म देख कर तो मेरी पैंटी से पानी टपक गया।
मुकेश जी मुझे देख कर चौंक गए पर उन्होंने भी तौलिया उठाने की कोई जल्दी नहीं की, शायद वे समझ गए थे कि मेरे मन में क्या चल रहा है।

मैं उनके नंगे जिस्म को बड़ी बड़ी आँखें करके देख रही थी... पैरों के बीच उनका बड़ा सा लंड लटक रहा था... काला सा...

मेरे को पता नहीं क्या हुआ, मेरे पैर वहीं जम गए.. सब कुछ अच्छा लग रहा था।

मुकेश जी तौलिया लपेट कर मेरे पास आये और मेरे कंधे पर हाथ रख दिया।

मैं सिहरन से भर गई.. एक मर्द का पहला स्पर्श था!

वे बोले- कुसुम तुम मेरा ईमान ख़राब कर रही हो, तुमने मुझे नंगा देख लिया और मुझे भी तुमको देखना है।
मैंने पूछा- क्या देखना है?

मुकेश जी- जिस हालात में मुझे देखा है उसी हालात में देखना है तुमको!

मैं शर्म से लाल हो गई, मेरे गले से आवाज़ नहीं निकली।

तभी मुकेश जी मेरे और पास आ गए, मेरी आँखें बंद हो गई।
वो इतनी पास थे कि मुझे उनकी सांसें महसूस होने लगी।

इसकी पहले वो आगे बढ़ते, मैं उनको धक्का देकर बाहर को भागी और किचन में आ गई।

मुकेश जी ने नाश्ता किया और यह कह कर बाहर चले गए कि वो सामान ले कर आते हैं। पिंकू भी सारी तैयारी करा के घर चला गया कि वो शाम को आएगा।

अब मैं अकेली थी।

कहानी जारी रहेगी।
rahulsrivas75@gmail.com

कहानी का अगला भाग : गाँव की कुसुम और उसकी आपबीती-2

Other stories you may be interested in

अपने ऑफिस वाले सर से होटल में चुद गयी

हैलो फ्रेंड्स, मेरा नाम नेहा है. मैं जॉब करती हूँ और शहर में रहती हूँ. मैं बहुत सेक्सी और बड़ी चूचियां और बड़ी गांड वाली काफी सुन्दर लड़की हूँ. मेरी जॉब बहुत अच्छी है, ये जॉब मुझे मेरे सेक्सी जिस्म […]
Full Story >>>

दोस्त की बहन की हवस पूरी की

दोस्तो ! मेरा नाम दीपक है, मैं 26 साल का हूँ. मेरी लम्बाई 6 फीट और 1 इंच है. मैं देखने में काफी गोरा हूं और मेरी लम्बाई की वजह से मेरी पर्सनेलिटी भी अच्छी दिखाई देती है. मेरी पिछली कहानी […]
Full Story >>>

मेरी सुहागरात कैसे मनी

मेरा नाम सरला है और मेरी उम्र 38 साल की है. मूल रूप से मैं राजस्थान के बीकानेर में एक छोटे से गाँव की रहने वाली हूँ. मेरे परिवार में मेरे माता-पिता के अलावा मेरा एक छोटा भाई भी है. […]
Full Story >>>

बेटे की कामवासना पूर्ति

मेरा नाम सुषमा है. मैं एक हाउस वाइफ हूँ. मेरी उम्र 42 साल है. मेरे पति मुझसे 20 साल बड़े हैं. उनकी उम्र 62 साल की है. आपने कई बार सुना होगा कि प्यार अंधा होता है. प्यार में उम्र […]
Full Story >>>

कमसिन लड़की की अनचुदी चूत का मजा

अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज पढ़ने वाले मेरे प्यारे दोस्तो, अभी कुछ समय पहले ही मुझे एक नया सेक्स अनुभव हुआ जिसको मैं आप सब पाठकों से शेयर कर रहा हूँ. मेरी उम्र 28 साल की है. मेरी शादी हुए अभी कुछ […]
Full Story >>>